वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 405
ISBN-978-93-82071-92-1

समवसरण सिद्धार्थ वृक्ष विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

हस्तिनापुर में जन्मे तीर्थंकर, चक्रवर्ती एवं कामदेव पद से समन्वित भगवान श्री शांतिनाथ के केवलज्ञानकल्याणक, पौष शु. दशमी-10 जनवरी 2014 के अवसर पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के अमृत महोत्सव 2013-14 के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	पौष शु. दशमी, 10 जनवरी 2014	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

अर्हन्तो मंगलं कुर्युः, सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि, साधवो मम मंगलम्।।1।।

मंगलं जिनधर्मः स्यात् , जिनवाणी च मंगलम्।
जिनार्चा जिनगेहाश्च, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।2।।

वर्तमान में सभी मनुष्यों का जीवन मंगलमयी हो, इसके लिए देवदर्शन, भगवान का अभिषेक, पूजन, भगवान की भक्ति, मण्डल विधानों का आयोजन मंगल साधन है। जिनेन्द्रदेव की भक्ति, स्तुति कर्मनिर्जरा में विशेष कारण है। भक्त भगवान की भक्ति करते–करते एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। पूज्य माताजी हमेशा अपने प्रवचनों में कहती हैं प्रत्येक प्राणी की आत्मा भगवान आत्मा है। जैसे दूध में घी विद्यमान है वैसे ही प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम को पाकर, पूरे विश्व में ज्ञान का अलख जगाने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य जगत में 300 ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है। 365 दिनों में प्रायः कहीं न कहीं पूज्य माताजी द्वारा रचित इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, शान्तिविधान, जिनगुणसम्पत्ति विधान आदि होते रहते हैं।

विधानों की श्रृंखला में यह 'समवसरण सिद्धार्थ वृक्ष विधान' एक नया विधान है। यह विधान भगवान के समवसरण के अतिशय का वर्णन करने वाला है। इस विधान को करके सभी भव्यजीव अपने जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि को प्राप्त करें, मिथ्यात्व को दूरकर सम्यग्दर्शन रूपी प्रकाश को प्राप्त करें, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु को प्राप्त करें और वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि को प्राप्त हो, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल कामना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

पूजा विधानों की श्रृँखला में परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने यह ''समवसरण सिद्धार्थवृक्ष विधान'' अतिशायी कृति के रूप में हमें प्रदान किया है। इस विधान में समवसरण की छठी भूमि-कल्पवृक्ष भूमि है, जहाँ पर चारों दिशा में सिद्धार्थ वृक्ष में सिद्धों की प्रतिमाएँ हैं, उन सिद्ध प्रतिमाओं से सहित सिद्धार्थवृक्ष की पूजा है। इन सिद्धों की प्रतिमाओं के दर्शन से ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त होती हैं। पूज्य माताजी ने इस विधान के मंगलाचरण में लिखा है–

प्रभु समवसरण की छठी भूमि, यह कल्पभूमि जन मन हरती।
चारों दिश में सिद्धार्थ वृक्ष, में सिद्धों की प्रतिमा दिखतीं।।
उन सिद्धबिम्ब के दर्शन से, सम्पूर्ण ऋद्धि-सिद्धी मिलती।
मैं सिद्ध बिम्ब को नित वंदूँ, वंदत ही गुणसंपद् फलती।।

इस विधान में सर्वप्रथम मंगलाचरण है, उसके बाद समवसरण की पूजा है। फिर समवसरण सिद्धार्थवृक्ष पूजा है। समवसरण की छठी भूमि कल्पवृक्ष भूमि में पूर्व दिशा में नमेरू सिद्धार्थवृक्ष, दक्षिण दिशा में मंदार सिद्धार्थवृक्ष, पश्चिम दिशा में संतानक और उत्तर दिशा में पारिजात सिद्धार्थ वृक्ष हैं। एक तीर्थंकर के समवसरण संबंधी 4 सिद्धार्थ वृक्ष हैं और 24 तीर्थंकरों के समवसरण संबंधी 24×4=96 सिद्धार्थ वृक्ष है। एक-एक सिद्धार्थ वृक्ष पर 4-4 जिनप्रतिमाएं है अतः 96×4=384 जिनप्रतिमाएं हैं और प्रत्येक सिद्धार्थवृक्ष के चारों दिशा में 1-1 मानस्तंभ हैं। 1-1 मानस्तंभ में 4-4 जिनप्रतिमाएं हैं अतः 384×4=1536 जिनप्रतिमाएं मानस्तंभ में विराजमान हैं। इन सभी अर्थात् 384+1536=1920 जिनप्रतिमाओं को इस विधान में अर्घ्य चढ़ाया है। यह एक चमत्कारिक विधान है। इस विधान को करने वाले भव्यजीव निश्चित ही एक दिन समवसरण का दर्शन करके ऋद्धि-सिद्धि को प्राप्त करते हैं। पूज्य माताजी ने इस विधान की पूजा के अंत में लिखा है–

जो भव्य भक्ति से समवसरण के, सिद्धार्थ वृक्ष को यजते हैं।
सिद्धों के प्रतिबिम्बों का अर्चन, करके सुख सम्पत्ति लभते हैं॥
वे समवसरण दर्शन करके, सब ऋद्धि-सिद्धि पा जाते हैं।
फिर 'ज्ञानमती' कैवल्य पाय, निश्चित सिद्धालय जाते हैं।।

इस प्रकार इस विधान में 2 पूजा हैं, 96 अर्घ्य हैं, 1 पूर्णार्घ्य है एवं 2 जयमालाएं हैं।

यह नूतन विधान सभी के लिए मंगलकारी हो एवं इस विधान को करके सभी भव्य जीव समवसरण का दर्शन, वंदन कर एक दिन साक्षात् समवसरण का दर्शन करें, यही मंगल भावना है।

दो शब्द

–आर्यिका सुव्रतमती

सरस्वती लक्ष्मी जहाँ, नितप्रति करें प्रणाम।
पुण्यमयी उस धाम का, समवसरण है नाम।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं–इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका चारित्रचन्द्रिका आर्यिका शिरोमणि परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करते हुए अब तक लगभग 300 ग्रंथों का लेखन शुद्ध प्रासुक लेखनी से आगमानुसार किया है।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान आदि सशक्त माध्यम है। जब लोग पूज्य माताजी द्वारा रचित विधानों की पूजाओं को पढ़ते हैं, तो वे भक्ति में भाव विभोर हो जाते हैं, उनमें पैर थिरकने लग जाते हैं और वे भक्ति भाव से पूजा करके असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं।

इस 'समवसरण सिद्धार्थवृक्ष विधान' में भगवान के समवसरण की पूजा एवं समवसरण में छठी भूमि कल्पवृक्ष भूमि में स्थित सिद्धार्थ वृक्ष की पूजा है। पूज्य माताजी ने अनेकों समवसरण विधान की जैसे-भगवान महावीर समवसरण, भगवान पार्श्वनाथ समवसरण, भगवान शान्तिनाथ समवसरण आदि विधानों की रचना करके अनेकों बार, सैंकड़ों बार परोक्षरूप में भगवान के समवसरण का दर्शन, वंदन और समवसरण रचना का सूक्ष्मता से अवलोकन किया है।

अयोध्या में पूज्य माताजी की प्रेरणा से शास्त्रोक्त समतल भव्य समवसरण रचना का निर्माण हुआ है। प्रयाग में भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ का समवसरण विराजमान है। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शान्तिनाथ का सुंदर समवसरण पूज्य माताजी की प्रेरणा से बनने जा रहा है। समवसरण की महिमा अपरम्पार है। पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने समवसरण विंशतिका में समवसरण का स्वरूप बताते हुए लिखे है–

जहाँ पहुँचते ही दर्शक का पाप शमन होता।
जहाँ पहुँचते ही मानी का मान गलन होता।।
सबको शरण प्रदाता वह ही समवसरण माना।
जिनवर की उस धर्मसभा को नमूँ परमधामा।।

इस विधान की प्रूफरीडिंग के माध्यम से समवसरण रचना के स्वाध्याय का लाभ मुझे प्राप्त हुआ है। यह विधान मेरे जीवन में एक दिन साक्षात् समवसरण का दर्शन करावें एवं भव भ्रमण को दूर करके केवलज्ञान की प्राप्ति में सहायक हो, यही मंगल भावना है। इन्हीं भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के चरणों में कोटि–कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
1. समवसरण का वर्णन	1
2. समवसरण में आठ भूमि और तीन कटनी	3
3. मंगलाचरण	6
4. समवसरण पूजा	7
5. समवसरण सिद्धार्थवृक्ष पूजा	12
6. प्रशस्ति	37
7. समवसरण सिद्धार्थवृक्ष की आरती	38
8. समवसरण की मंगल आरती	39
9. भजन	40

मण्डल का नक्शा

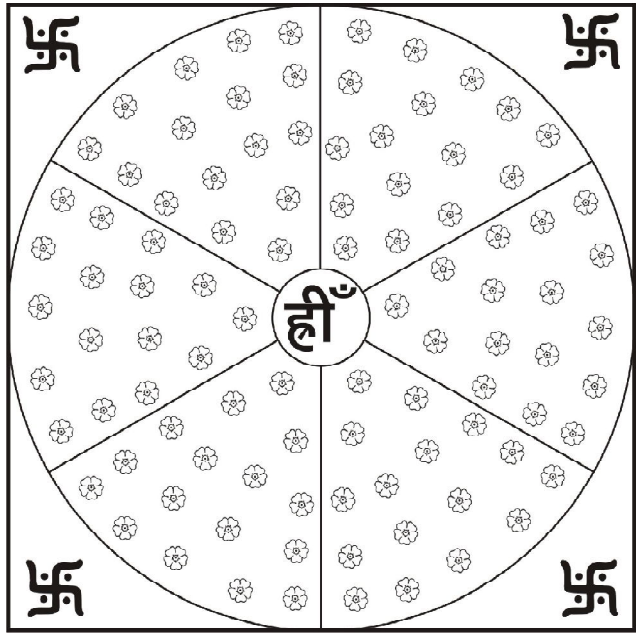

पूजा-2, कुल अर्घ्य-96, पूर्णार्घ्य-1, जयमाला-2

समवसरण का वर्णन

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय नमः

भगवान को केवलज्ञान प्रगट होते ही इन्द्र की आज्ञा से कुबेर अर्धनिमिष में समवसरण की रचना कर देता है। उस समय भगवान तीनों लोकों को और उनकी भूत, भावी, वर्तमान समस्त पर्यायों को युगपत् एक समय में जान लेते हैं।

भगवान शांतिनाथ का समवसरण पृथ्वी से 5000 धनुष (20000 हाथ) ऊपर आकाश में अधर है। पृथ्वी से एक हाथ ऊपर से एक-एक हाथ ऊँची बीस हजार सीढ़ियाँ हैं। इनसे चढ़कर मनुष्य और तिर्यंच आदि सभी भव्य जीव-बाल, वृद्ध, अंधे, लूले, लंगड़े, रोगी आदि अंतर्मुहूर्त (48 मिनट) में ऊपर पहुँच जाते हैं। भगवान ऋषभदेव का समवसरण 12 योजन (96 मील) का है। आगे घटते-घटते महावीर स्वामी का समवसरण एक योजन (8 मील) का है।

इसमें चार परकोटे और पाँच वेदियाँ हैं। इनके आठ भूमियाँ हैं। चारों दिशाओं में बहुत ही विस्तृत वीथी बड़ी-बड़ी गलियाँ हैं।

इस समवसरण में क्रम से पहले धूलिसाल परकोटा, चैत्यप्रासाद भूमि, वेदी, खातिकाभूमि, वेदी, लताभूमि, परकोटा, उपवनभूमि, वेदी, ध्वजभूमि, परकोटा, कल्पभूमि, वेदी, भवनभूमि, परकोटा, श्रीमण्डपभूमि और वेदी है। आगे

16 सीढ़ी ऊपर चढ़कर पहली कटनी, 8 सीढ़ी चढ़कर दूसरी कटनी, पुनः 8 सीढ़ी चढ़कर तीसरी कटनी है। इसी पर भगवान विराजमान हैं।

प्रत्येक परकोटे और वेदियों में चारों दिशाओं में एक-एक गोपुर द्वार हैं। जिनमें से पूर्वदिशा में "विजय", दक्षिण में "वैजयंत" पश्चिम में "जयंत" और उत्तर में "अपराजित" ऐसे नाम हैं। इन चारों के उभय पार्श्व में दो-दो नाट्यशालाएं हैं, जिनमें देवांगनाएं भगवान की भक्ति में विभोर हो नृत्य-गान करती रहती हैं। वहाँ द्वारों के दोनों और नवनिधि, मंगलघट और घूपघट आदि स्थित हैं। प्रत्येक परकोटे के द्वारों पर देवगण हाथ में दण्ड, मुद्गर आदि लेकर रक्षक बनकर खड़े हुए हैं।

24 तीर्थंकरों के समवसरण का प्रमाण

1.	भगवान ऋषभदेव का समवसरण	12 योजन (96 मील)
2.	भगवान अजितनाथ का समवसरण	$11\frac{1}{2}$ योजन (92 मील)
3.	भगवान संभवनाथ का समवसरण	11 योजन (88 मील)
4.	भगवान अभिनंदननाथ का समवसरण	$10\frac{1}{2}$ योजन (84 मील)
5.	भगवान सुमतिनाथ का समवसरण	10 योजन (80 मील)
6.	भगवान पद्मप्रभु का समवसरण	$9\frac{1}{2}$ योजन (76 मील)
7.	भगवान सुपार्श्वनाथ का समवसरण	9 योजन (72 मील)
8.	भगवान चंद्रप्रभ का समवसरण	$8\frac{1}{2}$ योजन (68 मील)
9.	भगवान पुष्पदंतनाथ का समवसनण	8 योजन (64 मील)
10.	भगवान शीतलनाथ का समवसरण	$7\frac{1}{2}$ योजन (60 मील)
11.	भगवान श्रेयांसनाथ का समवसरण	7 योजन (56 मील)
12.	भगवान वासुपूज्यनाथ का समवसरण	$6\frac{1}{2}$ योजन (52 मील)
13.	भगवान विमलनाथ का समवसरण	6 योजन (48 मील)
14.	भगवान अनंतनाथ का समवसरण	$5\frac{1}{2}$ योजन (44 मील)
15.	भगवान धर्मनाथ का समवसरण	5 योजन (40 मील)
16.	भगवान शांतिनाथ का समवसरण	$4\frac{1}{2}$ योजन (36 मील)
17.	भगवान कुंथुनाथ का समवसरण	4 योजन (32 मील)

18. भगवान अरनाथ का समवसरण $3\frac{1}{2}$ योजन (28 मील)
19. भगवान मल्लिनाथ का समवसरण 3 योजन (24 मील)
20. भगवान मुनिसुव्रतनाथ का समवसरण $2\frac{1}{2}$ योजन (20 मील)
21. भगवान नमिनाथ का समवसरण 2 योजन (16 मील)
22. भगवान नेमिनाथ का समवसरण $1\frac{1}{2}$ योजन (12 मील)
23. भगवान पार्श्वनाथ का समवसरण $1\frac{1}{4}$ योजन (10 मील)
24. भगवान महावीर स्वामी का समवसरण 1 योजन (8 मील)

समवसरण में प्रवेश करते ही चारों गली में दिव्य रत्नमय मानस्तंभ हैं जो कि भगवान से बारहगुने ऊँचे हैं। जैसे कि– भगवान शांतिनाथ के शरीर की ऊँचाई 160 हाथ है अतः ये बारहगुणे अर्थात् 160×12=1920 हाथ ऊँचे हैं। बीस योजन तक प्रकाश फैलाते हैं। इनके दर्शन से मानी का मान गलित हो जाता है और वह भव्यात्मा सम्यग्दृष्टि बनकर अनंत संसार को सीमित कर लेता है।

केवली भगवान के प्रभाव से चारों तरफ चार सौ कोस तक सुभिक्षता, हिंसा और उपसर्गादि का अभाव, सभी जन्मजात शत्रु-सिंह, हिरण आदि का आपस में मैत्री भाव, छहों ऋतुओं के फल-फूलों का एक साथ आ जाना आदि अतिशय हो जाते हैं।

भगवान के श्रीविहार में आकाश में अधर, उनके चरण के नीचे देवगण स्वर्णमय सुगंधित दिव्य कमलों को रचते जाते हैं और अहिंसा धर्म के दिग्विजय को सूचित करता हुआ 'धर्मचक्र' भगवान के आगे-आगे चलता है एवं सरस्वती-लक्ष्मी देवी आजू-बाजू में चलती हैं। आकाशगामी ऋद्धिधारी साथ में चलते हैं, असंख्य देव-देवियाँ, इन्द्रादिगण पीछे-पीछे चलते हैं एवं साधारण मुनि, आर्यिकाएं, मनुष्य, पशु आदि नीचे-नीचे चलते हैं। जहाँ भगवान रुक जाते हैं वहाँ पुनः कुबेर समवसरण की रचना कर देता है।

समवसरण में आठ भूमि और तीन कटनी

1. पहली ''चैत्यप्रासादभूमि'' है, इसमें एक-एक जिनमंदिर के अंतराल में पांच-पांच प्रासाद हैं।

2. दूसरी ''खातिकाभूमि'' है, इसके स्वच्छ जल में हंस आदि कलरव कर रहे हैं और कमल आदि पुष्प खिले हैं।

3. तीसरी ''लताभूमि'' है, इसमें छहों ऋतुओं के पुष्प खिले हुए हैं।

4. चौथी ''उपवनभूमि'' है, इसमें पूर्व आदि दिशा में क्रम से अशोक, सप्तच्छद, चंपक और आम्र के वन हैं। प्रत्येक वन में एक-एक चैत्यवृक्ष हैं जिनमें 4-4 जिनप्रतिमाएं विराजमान हैं। प्रत्येक प्रतिमाओं के सामने एक-एक मानस्तंभ हैं।

5. पांचवी ''ध्वजाभूमि'' है, इसमें सिंह, गज, वृषभ, गरुड़, मयूर, चन्द्र, सूर्य, हंस, पद्म और चक्र इन दस चिन्हों से सहित महाध्वजाएं और उनके आश्रित लघुध्वजाएं 108-108 हैं। सब मिलाकर 4,70,880 हैं।

6. छठी ''कल्पभूमि'' है, इसमें भूषणांग आदि दस प्रकार के कल्पवृक्ष हैं। चारों दिशा में क्रम से नमेरु, मंदार, संतानक और पारिजात ऐसे एक-एक सिद्धार्थवृक्ष हैं। इनमें चार-चार सिद्धप्रतिमाएं विराजमान हैं ।

7. सातवीं ''भवनभूमि'' में भवन बने हुए हैं। इस भूमि के पार्श्व भागों में अर्हंत और सिद्धप्रतिमाओं से सहित नौ-नौ स्तूप हैं।

8. आठवीं ''श्रीमण्डपभूमि'' है, इसमें 16 दीवालों के बीच में 12 कोठे हैं जिनमें 1. गणधरादि मुनि, 2. कल्पवासिनी देवी, 3. आर्यिका और श्राविका, 4. ज्योतिषी देवी, 5. व्यंतर देवी, 6. भवनवासिनी देवी, 7. भवनवासी देव, 8. व्यंतर देव, 9. ज्योतिष देव, 10. कल्पवासी देव, 11. चक्रवर्ती आदि मनुष्य और 12. सिंहादि तिर्यंच, ऐसे बारहगण के असंख्यातों भव्यजीव बैठकर धर्मोपदेश सुनते हैं। वहां पर रोग, शोक, जन्म, मरण, उपद्रव आदि बाधाएं नहीं हैं।

प्रथम कटनी पर पूजा द्रव्य एवं मंगल द्रव्य रखे हुए हैं। इसी प्रथम कटनी पर चारों दिशाओं में यक्षेन्द्र अपने मस्तक पर धर्मचक्र धारण किये हुए हैं।

द्वितीय कटनी पर सिंह, बैल, कमल, चक्र, माला, गरुड़ और हाथी इन आठ चिन्हों से युक्त महाध्वजाएं हैं तथा धूपघट, नवनिधियाँ, पूजन द्रव्य एवं मंगलद्रव्य स्थित हैं।

तृतीय कटनी पर गंधकुटी में सिंहासन पर लाल कमल की कर्णिका पर भगवान शांतिनाथ चार अंगुल अधर विराजमान हैं। इनका मुख एक तरफ होते हुए भी चारों तरफ दिखने से ये चतुर्मुखी ब्रह्मा कहलाते हैं। भगवान के पास अशोकवृक्ष, तीन छत्र, सिंहासन, भामंडल, चौंसठ चंवर, सुरपुष्पवृष्टि, दुंदुभि

बाजे और हाथ जोड़े सभासद ये आठ महाप्रातिहार्य हैं। सभी समवसरण में उन-उन तीर्थंकर के शासन देव-देवी विद्यमान हैं। जैसे कि भगवान शांतिनाथ के समवसरण में गरुड़ यक्ष और महामानसी यक्षी विद्यमान हैं।

श्री शांतिनाथ भगवान को मेरा अनंतबार नमस्कार हो।

इस समवसरण का वर्णन तिलोयपण्णत्ति, हरिवंशपुराण और समवसरण स्तोत्र के आधार से हैं।

इस समवसरण सिद्धार्थवृक्ष विधान में चौबीसों तीर्थंकरों के समवसरण में छठी भूमि में–कल्पभूमि में स्थित सिद्धार्थवृक्षों की सिद्ध प्रतिमाओं की पूजा है।

समवसरण सिद्धार्थवृक्ष विधान

मंगलाचरणम्

नमः ऋषभदेवाय, तेऽजिताय नमो नमः।
श्रीसम्भव! नमस्तुत्य–मभिनन्दन! ते नमः।।1।।
नमः सुमतिनाथाय !, श्रीपद्मप्रभ ! ते नमः।
नमः सुपार्श्वनाथाय !, नमश्चन्द्रप्रभाय ते।।2।।
पुष्पदन्त ! नमस्तुभ्यं, शीतलेशाय ते नमः।
नमः श्रेयांसनाथाय, वासुपूज्य ! नमोऽस्तु ते।।3।।
नमः विमलनाथाय, नमोऽनंतजिनेश ! ते।
धर्मनाथ ! नमस्तुभ्यं, शान्तिनाथ ! नमोऽस्तु ते।।4।।
कुंथुनाथ ! नमस्तुभ्य–मरनाथ ! नमो नमः।
नमः श्रीमल्लिनाथाय, मुनिसुव्रत ! ते नमः।।5।।
नमः श्रीनमिनाथाय, नेमिनाथ ! नमोऽस्तु ते।
नमः श्रीपार्श्वनाथाय, महावीर ! नमोऽस्तु ते।।6।।
चतुर्विंशतितीर्थेशाः, धर्मचक्राधिपा अमी।
सर्वाननन्तशो नौमि, ते मे कुर्वन्तु मंगलम्।।7।।
सिद्धाः सिद्धिविधातारः, तांस्तद् बिंबानि च स्तुवे।
ते सर्वे तानि सर्वाणि, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।8।।
सिद्धार्थतरवः सर्वे, सिद्धार्चास्तेषु याः स्थिताः।
ते सर्वे प्रतिमाश्चापि, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।9।।

–शंभु छन्द–

प्रभु समवसरण की छठी भूमि, यह कल्पभूमि जन मन हरती।
चारों दिश में सिद्धार्थवृक्ष में, सिद्धों की प्रतिमा दिखतीं।।
उन सिद्धबिम्ब के दर्शन से, सम्पूर्ण ऋद्धि–सिद्धी मिलती।
मैं सिद्धबिम्ब को नित वंदूं, वंदत ही गुणसम्पद् फलती।।10।।

।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पूजा नं.–1

समवसरण पूजा

अथ स्थापना–शंभु छंद

निज आत्मसुधारस निर्झरिणी, जल पीकर अतिशय तृप्त हुये।
वे ही निजकर्म कालिमा को, धोकर के अतिशय शुद्ध हुये।।
उनका ही धनपति समवसरण, रचते हैं अतिशय भक्ती से।
उन समवसरण वैभव संयुत, जिनवर को पूजूँ भक्ती से।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–गीताछंद

क्षीरोदधी का नीर पयसम, स्वर्ण झारी में भरूँ।
निज कर्म पंकिल धोवने को, नाथपद धारा करूँ।।
तीर्थंकरों के समवसृति में, आठ सुंदर भूमियाँ।
जैवंत होवें सर्वदा, बहु विभवसंयुत भूमियाँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्मय चिदंबर चित्पुरुष, तीर्थेश के पादाब्ज को।
शुभ गंध से चर्चन करूँ, मुझको सुगुण यश प्राप्त हो।।तीर्थं.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य चिंतामणि जिनेश्वर को रिझाऊँ भक्ति से।
उज्ज्वल अखंडित शालि तंदुल, पुंज अर्पूं युक्ति से।।

तीर्थंकरों के समवसृति में, लतावन की भूमियाँ।
जैवंत होवें सर्वदा फूले कुसुम की भूमियाँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली केवड़ा सुरभित कुसुम अर्पण करूँ।
जिनराज पारसमणि जजत निज आत्म को कंचन करूँ।।तीर्थं.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी इमरती रसभरी मिष्टान्न से भर थाल को।
नित आत्म अमृत स्वाद हेतु मैं चढ़ाऊँ नाथ को।।तीर्थं.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति स्वर्ण दीपक में दिये सब तम हरे।
निज ज्ञान ज्योति हो प्रगट, इस हेतु हम आरति करें।।तीर्थं.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित दशांगी धूप खेऊँ, धूप घट की अग्नि में।
निज आत्मयश सौरभ उठे, सुख शांति फैले विश्व में।।तीर्थं.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमृतफल सरस फल, अर्प कर प्रभु पूजते।
स्वात्मैक परमानंद अमृत, प्राप्त हो जिन भक्ति से।।तीर्थं.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत आदि लेकर, अर्घ भर कर ले लिया।
निजरत्नत्रय निधि लाभ हेतु, नाथ को अर्पण किया।।तीर्थं.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

सुवरण झारी में भरूँ, सीता नदि को नीर।
शांतीधारा त्रय करूँ, मिले भवोदधि तीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली केवड़ा, बेला वकुल गुलाब।
पुष्पांजलि अर्पण करत, शीघ्र-स्वात्म सुख लाभ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितवृषभादिवर्द्धमानान्तेभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा –

चिन्मय चिंतामणि प्रभो, गुण अनंत की खान।
समवसरण वैभव सकल, वह लवमात्र समान।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, तुम धर्म चक्र के कर्ता हो।
जय जय अनंतदर्शन सुज्ञान, सुखवीर्य चतुष्टय भर्त्ता हो।।
जय जय अनंत गुण के धारी प्रभु तुम उपदेश सभा न्यारी।
सुरपति की आज्ञा से धनपति रचता है त्रिभुवन मनहारी।।2।।

प्रभु समवसरण गगनांगण में, बस अधर बना महिमाशाली।
यह इन्द्र नीलमणि रचित गोल आकार बना गुणमणिमाली।।
सीढ़ी इक एक हाथ ऊँची, चौड़ी सब बीस हजार बनी।
नर बाल वृद्ध लूले लंगड़े चढ़ जाते सब अतिशायि घनी।।3।।

पहला परकोटा धूलिसाल, बहुवर्ण रत्न निर्मित सुंदर।
कहिं पद्मराग कहिं मरकतमणि, कहिं इन्द्रनीलमणि से मनहर।।
इसके अभ्यंतर चारों दिश, हैं मानस्तंभ बने ऊँचे।
ये बारह योजन से दिखते, जिनवर से द्विदश गुणे ऊँचे।।4।।

इनमें चारों दिश जिनप्रतिमा उनको सुरपति नरपति यजते।
ये सार्थक नाम धरें दर्शन से मानो मान गलित करते।।
इस समवसरण में चार कोट अरु पांच वेदिकाएं ऊँची।
इनके अंतर में आठ भूमि फिर प्रभु की गंधकुटी ऊँची।।5।।

इस धूलिसाल अभ्यंतर में है भूमि चैत्यप्रासाद प्रथम।
एकेक जैन मंदिर अंतर से पाँच पाँच प्रासाद सुगम।।
चारों गलियों में उभय तरफ दो दोय नाट्यशालाएं हैं।
अभिनय करतीं जिनगुण गातीं सुर भवनवासि कन्याएं हैं।।6।।

फिर वेदी वेढ़ रही ऊँची गोपुर द्वारों से युक्त वहाँ।
द्वारों पर मंगलद्रव्य निधी ध्वज तोरण घंटा ध्वनी महा।।
फिर आगे खाई स्वच्छ नीर से भरी दूसरी भूमी है।
फूले कुवलय कमलों से युत हंसों के कलरव की ध्वनि है।।7।।

फिर दूजी वेदी के आगे तीजी है लताभूमि सुन्दर।
बहुरंग बिरंगे पुष्प खिले जो पुष्पवृष्टि करते मनहर।।
फिर दूजा कोट बना स्वर्णिम, गोपुर द्वारों से मन हरता।
नवनिधि मंगल घट धूप घटों युत में प्रवेश करती जनता।।8।।

आगे उद्यान भूमि चौथी चारों दिश बने बगीचे हैं।
क्रम से अशोक वन सप्तवर्ण चंपक अरु आम्र तरू के हैं।।
प्रत्येक दिशा में एक-एक तरु चैत्य वृक्ष अतिशय ऊँचे।
इनमें जिन प्रतिमा प्रातिहार्ययुत चार-चार मणिमय दीखें।।9।।

इसके आगे वेदी सुन्दर फिर ध्वजाभूमि ध्वज से शोभे।
फिर रजतवर्णमय परकोटा गोपुर द्वारों से युत शोभे।।
फिर कल्पवृक्ष भूमी छट्ठी दशविध के कल्पवृक्ष इसमें।
प्रतिदिश सिद्धार्थ वृक्ष चारों हैं सिद्धों की प्रतिमा उनमें।।10।।

चौथी वेदी के बाद भवन भूमी सप्तमि के उभय तरफ।
नव नव स्तूप रत्न निर्मित, उनमें जिनवर प्रतिमा सुखप्रद।।
परकोटा स्फटिकमयी चौथा मरकत मणि गोपुर से सुन्दर।
उस आगे श्रीमंडप भूमी बारह कोठों से जनमनहर।।11।।

फिर पंचम वेदी के आगे त्रय कटनी सुन्दर दिखती हैं।
पहली कटनी पर यक्ष शीश पर धर्मचक्र चारों दिश हैं।।
दूजी कटनी पर आठ महाध्वज नवविधि मंगल द्रव्य धरे।
तीजी कटनी पर गंधकुटी पर जिनवर दर्शन पाप हरें।।12।।

जय जय जिनवर सिंहासन पर चतुरंगुल अधर विराज रहे।
जय जय जिनवर की दिव्यध्वनी सुनकर सब भविजन तृप्त भये।।

सब जातविरोधी प्राणीगण, आपस में मैत्री भाव धरें।
जो पूजें ध्यावें गुण गावें वे जिनगुण संपति प्राप्त करें।।13।।

–दोहा–

सब जन को देता शरण, समवसरण जिन आप।
'ज्ञानमती' सुख संपदा, भरो पूर्ण निष्पाप।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भव्य प्रभु समवसरण की अर्चना करें।
संपूर्ण अमंगल व रोग, शोक, दुख हरें।।
निज आत्म के गुणों को संचित किया करें।
'सज्ज्ञानमती' से ही, जीवन सफल करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.–2

समवसरण सिद्धार्थ वृक्ष पूजा

–अथ स्थापना–नरेन्द्र छंद–

समवसरण में छठी भूमि है, कल्पवृक्ष की सुंदर।
चारों दिश में एक-एक, सिद्धार्थ वृक्ष हैं मनहर।।
इनमें चारों दिश इक इक हैं, सिद्धों की प्रतिमायें।
हम पूजें आह्वानन करके, इच्छित फल पा जायें।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक–

चाल –नंदीश्वर पूजा

सीतानदि को जल स्वच्छ, कंचन भृंग भरूँ।
त्रयधारा देते चर्ण, भव भव तपन हरूँ।।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, सिद्धों की प्रतिमा।।
परमानन्दामृत हेतु, पाऊँ गुण गरिमा।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः जलंनिर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन गंध, प्रभु के चरण जजूँ।
पाऊँ निज अनुभव गंध, जिनवर शरण भजूँ।।मैं.।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा

तंदुल अतिधवल अखंड, धोकर थाल भरूँ।
होवे मुझ ज्ञान अखंड, तुम ढिग पुंज धरूँ।।मैं.।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

वकुलादि सुगंधित पुष्प, लाऊँ चुन चुन के।
पाऊँ निज समरस सौख्य, प्रभु चरणों धरके।।मैं.।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुःसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू है मोतीचूर, अर्पूं तुम सन्मुख।
हो क्षुधा वेदनी दूर, पाऊँ स्वातम सुख।।मैं.।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रजाल, आरति करते ही।
नशे मोह तिमिर का जाल, ज्योति प्रगटे ही।।मैं.।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, अग्नी में खेऊँ।
उड़ जावे चहुँदिश धूम्र, तुम पद को सेवूँ।।मैं.।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेव बादाम, फल से यजन करूँ।
हो निजपद में विश्राम, भव भव भ्रमण हरूँ।।मैं.।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल से अर्घ बनाय, रत्न मिलाऊँ मैं।
सिद्धों के चरण चढ़ाय, गुणमणि पाऊँ मैं।।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, सिद्धों की प्रतिमा।
परमानन्दामृत हेतु, पाऊँ गुण गरिमा।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिसंबंधिचतुश्चतुः-सिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुश्चतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयधारा प्रभु पद देत, हो जग में शांति।
जिनपूजा भवदधि सेतु, मिटती मन भ्रांति।।मै.।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जूही केतकी गुलाब, पुष्पांजलि करके।
पाऊँ निज गुण यशलाभ, चहुंगति दुख हरके।।मै.।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ १६ अर्घ

–सोरठा –

नित्य निरंजन सिद्ध, परमहंस परमातमा।
पाऊं निजगुण सिद्धि, पुष्पांजली चढ़ायके।।1।।

।।इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

चाल –हे दीनबंधु.....

श्री आदिनाथ का समोसरण विशाल है।
ध्वजभू को वेढ़ रजतमयी तृतिय साल[1] है।।
सिद्धार्थ नमेरू तरू है, कल्पभूमि में।
पूजूँ सदा चउसिद्ध की प्रतिमा प्रसिद्ध मैं।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण सुकल्प भूमि में मंदार तरू है।
उस मूल में चतुर्दिशा में सिद्धबिंब हैं।।

1. परकोटा।

प्रत्येक बिंब के समक्ष मानथंभ हैं।
पूजूँ सदा चउसिद्ध की प्रतिमा अनिंद हैं।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम सुकल्पभूमि में संतानकांघ्रिपा[1]।
सिद्धार्थ वृक्ष है इसी के चार हों दिशा।।
एकेक सिद्ध बिंब साधु वृंद वंद्य हैं।
पूजूँ सदा इन्हें ये चक्रवर्ति वंद्य हैं।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर सुकल्प भू में पारिजात वृक्ष है।
ये सिद्ध की प्रतिमाओं से सिद्धार्थ सार्थ है।।
जो इनको जजें उनके सर्वकार्य सिद्ध हैं।
पूजूँ सदा चउसिद्ध की प्रतिमा अनिंद हैं।।4।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश अजितनाथ की समवसरण कथा।
भू कल्पतरू पूर्व में नमेरु वृक्ष था।।
सिद्धार्थ नाम इसमें चार सिद्धबिंब हैं।
पूजूँ सदा ये सिद्धबिंब इंद्र वंद्य हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनराज समोसरण में जो कल्पवृक्ष हैं।
दक्षिणदिशी मंदार नाम सिद्ध[2] अर्थ है।।
उस मूल में चतुर्दिशा में सिद्धबिंब हैं।
पूजूँ सदा इन्हें ये तीन लोक वंद्य हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. संतानक नाम का वृक्ष। 2. सिद्धार्थ वृक्ष।

संतानकाख्य नाम के सिद्धार्थ वृक्ष में।
चारों दिशा में सिद्ध की प्रतिमा नमूँ उन्हें।।
जो पूजते जिनराज समोसर्ण को सदा।
वे स्वर्ग सौख्य भोग के शिव पावें शर्मदा।।7।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पारिजात नाम के सिद्धार्थ वृक्ष को।
नित पूजते हैं भक्ति से उन सिद्धबिंब को।।
वे गणपती सुरेंद्र चक्रवर्ति वंद्य भी।
अतिशय अनंत सौख्य धाम प्राप्त करें ही।।8।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिनेश समोसर्ण में विराजते।
दशविध के कल्पवृक्ष वहां पे हि राजते।।
पूरबदिशी नमेरू सिद्धार्थ वृक्ष है।
पूजूँ उन्हें चउदिश के जो सिद्धबिंब हैं।।9।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भी मनुष्य कल्पवृक्ष के निकट आते।
जो कुछ भी मांगते वो क्षणमात्र में पाते।।
दक्षिण में जो मंदार ही सिद्धार्थ वृक्ष है।
पूजूँ वहाँ चउदिश के जो सिद्धबिंब हैं।।10।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस कल्पभूमि में कहिं पे बावड़ी बनी।
लघु पर्वतों पे देवियाँ क्रीड़ा करें घनी।।

पश्चिम दिशी संतानक सिद्धार्थ वृक्ष है।
पूजूँ वहाँ चउदिश के जो सिद्धबिंब हैं।।11।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर में पारिजात जो सिद्धार्थ वृक्ष है।
उस मूल में चउदिश में सिद्ध बिंब रम्य हैं।।
प्रतिमा समक्ष मानथंभ जगत वंद्य हैं।
पूजूँ वहां चउदिश के जो सिद्धबिंब हैं।।12।।

ॐ ह्रीं संभवनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदनेश समोसर्ण में विराजते।
उसमें छठी धरा पे कल्पवृक्ष राजते।।
पूरबदिशी नमेरू सिद्धार्थ वृक्ष है।
पूजूँ वहाँ चउदिश के जो सिद्धबिंब हैं।।13।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिणदिशी कहा है मंदार वृक्ष जो।
उसके चतुर्दिशा में चउ सिद्धबिंब जो।।
सुरपति व चक्रवर्ती नरपति से वंद्य हैं।
पूजूँ वहाँ चउदिश भी जो मानथंभ हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिशी संतानक सिद्धार्थ वृक्ष है।
उसके चतुर्दिशा में चउ सिद्धबिंब हैं।।
निज साम्य सुधारस के स्वादी मुनी वहाँ।
वन्दन करें सतत ही हम पूजते यहाँ।।15।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थवृक्ष मूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यअर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

उत्तर में पारिजात जो सिद्धार्थ वृक्ष है।
मुनिगण से वंद्य नित्य ही सुरगण से पूज्य है।।
इसके चतुर्दिशा में चउ सिद्धबिम्ब हैं।
हम पूजते इन्हें ये सर्वार्थसिद्ध हैं।।16।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

–रोलाछंद –

सुमतिनाथ जिनराज, समवसरण में राजें।
छठी कल्पतरु भूमि, कल्पवृक्ष से साजें।।
पूरब दिश सिद्धार्थ, वृक्ष नमेरू मानों।
सिद्धबिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।17।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जो भवि पूजें नित्य, सिद्धों की प्रतिमायें।
समवसरण में जाय, अतिशय पुण्य कमायें।।
दक्षिण दिश मंदार, तरु सिद्धार्थ बखानों।
सिद्धबिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।18।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

साधु मुमुक्षू नित्य, स्वात्मसुधारस पीते।
सिद्धबिंब को ध्याय, कर्म अरी को जीतें।।
पश्चिमदिश सिद्धार्थ, संतानक तरु जानो।
सिद्धबिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।19।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

श्रावक भक्ति समेत, सिद्धबिम्ब को पूजें।
भवदधि शोषण हेत, करें प्रयत्न सुनीके।।

उत्तर दिश सिद्धार्थ, पारिजात तरु जानो।
सिद्धबिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।20।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

पद्मप्रभु भगवान, समवसरण में तिष्ठें।
उन अतिशय से भव्य, असंख्य मिलकर बैठें।।
पूरबदिश सिद्धार्थ, वृक्ष नमेरू मानों।
सिद्धबिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।21।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

इन्द्र सभी परिवार, लेकर वहाँ पे आवें।
भरें पुण्य भंडार, जिनवर गुण को गावें।।
दक्षिणदिशमंदार, तरु सिद्धार्थ बखानों।
सिद्धबिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।22।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

धन जन सुख परिवार, बढ़ता जिन भक्ती से।
मिले मुक्ति का द्वार, स्वपर भेद युक्ती से।।
पश्चिम दिश सिद्धार्थ, संतानक तरु जानों।
सिद्धबिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।23।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

मिले राज्य सन्मान, जग में मान्य कहावें।
जो करते गुणगान, जिनवर भक्ति बढ़ावें।।
उत्तर दिश सिद्धार्थ, पारिजात तरु जानों।
सिद्धबिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।24।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

श्री सुपार्श्वजिनराज, भविजन मन तम हरते।
जो पूजें प्रभुपाद अतिशय सुख निधि भरते।।
पूरब दिश सिद्धार्थ वृक्ष नमेरु जानों।
सिद्धबिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।25।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

त्रिभुवन वैभव पूर्ण, समवसरण सुखकारी।
भव्य करें भवचूर्ण, नित पूजें मनहारी।।
दक्षिण दिश मंदार, तरु सिद्धार्थ बखानो।
सिद्धबिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।26।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

चिंतामणि जिनभक्ति, चिंतित फल को देवे।
जो पूजें निज शक्ति, झट प्रगटित कर लेवें।।
पश्चिम दिश सिद्धार्थ, संतानक तरु जानों।
सिद्धबिम्ब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।27।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

कल्पवृक्ष की भूमि, मुंह मांगा फल देवे।
दर्श करें जो भव्य, सब उत्तम सुख लेवें।।
उत्तर दिश सिद्धार्थ, पारिजात तरु जानों।
सिद्धबिंब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।28।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

चंदा प्रभु भगवान, समवसरण नभ में है।
उन वचनामृतपान, करके भव्य नमें हैं।।

पूरबदिश सिद्धार्थ, वृक्ष नमेरू जानों।
सिद्धबिम्ब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।29।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीस्वाहा।

चंद्र सदृश आल्हाद, करते जिनवच जग में।
जो जजते चरणाब्ज, झट पहुँचे शिवपद में।।
दक्षिण दिश मंदार, तरु सिद्धार्थ बखानों।
सिद्धबिम्ब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।30।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीस्वाहा।

निज परिवार समेत, चंद्रसूर्य सुर आवें।
निज पद पावन हेतु, प्रभु पूजें गुण गावें।।
पश्चिम दिश सिद्धार्थ, संतानक तरु जानों।
सिद्धबिम्ब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।31।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीस्वाहा।

चंद्रकिरण समश्वेत, जिनवर तन अति सुंदर।
नेत्र हजार बनाय, दर्शन करें पुरंदर।।
उत्तर दिश सिद्धार्थ, पारिजात तरु जानों।
सिद्धबिम्ब हैं चार, पूजत भव दुख हानों।।32।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीस्वाहा।

–वसंततिलका छंद –

श्री पुष्पदंत जिनसर्वहितानुशास्ता।
जो पूजते समवसर्ण हरें असाता।।

है पूर्वदिक् तरु नमेरु नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिम्ब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।33।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीस्वाहा।

मंदार वृक्ष प्रतिमा यजते सदा जो।
स्वात्मैक सौख्य संपति भरते सदा वो।।
सिद्धार्थ वृक्ष सुखदायि नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिम्ब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।34।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीस्वाहा।

संतानकाख्य तरु में प्रतिमा नमें जो।
संसार घोर वन में न कभी भ्रमें वो।।
सिद्धार्थ वृक्ष प्रतिमा नमते मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।35।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीस्वाहा।

जो पारिजात तरु की प्रतिमा जजें हैं।
वे रोग शोक दुख संकट से बचे हैं।।
सिद्धार्थ वृक्ष सुखदायि नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।36।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीस्वाहा।

श्री शीतलेश वचनामृत तापहारी।
जो पूजते समोसर्ण न हों दुखारी।।
है पूर्वदिक् तरु नमेरु नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेन्द्रा।।37।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीस्वाहा।

संतानकाख्य तरु में प्रतिमा यजें जो।
संतान मोह अरि को उनकी नशे जो।।
है कल्पभूमि सिद्धार्थ नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।38।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

संतानकाख्य तरु में प्रतिमा यजें जो।
संतान मोह अरि को उनकी नशे जो।।
है कल्पभूमि सिद्धार्थ नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।39।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जो पारिजात तरु की प्रतिमा जजें हैं।
वे पाप ताप हर स्वात्म सुधा चखे हैं।।
है कल्पभूमि सिद्धार्थ नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।40।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

श्रेयांसनाथ जिनका जु समोसरण है।
सिद्धार्थ वृक्षदिक् पूर्व अपूर्व सो है।।
रम्या नमेरु प्रतिमा नमते मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।41।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

मंदार वृक्ष दिश दक्षिण में सुहाता।
जो भव्य नित्य जजते तम भाग जाता।।

भक्ती करें सम सुधा रसिका मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।42।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

सिद्धार्थ वृक्ष संतानक को जजें जो।
संतान सौख्य धन धान्य समृद्धि ले वो।।
ऋद्धीधरा सतत ध्यान धरें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।43।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जो पारिजात तरु की प्रतिमा भजे हैं।
वे जन्म मृत्यु भय से निश्चित छुटे हैं।।
भक्ती भरे स्तुति पढ़ें नित ही मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।44।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

श्री वासुपूज्य तनु लाल सरोज जैसा।
सुंदर लिखे समवसर्ण अपूर्व वैसा।।
है पूर्वदिक् तरु नमेरु नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।45।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

मंदार वृक्ष फलदायि अपूर्व सोहे।
जैनेन्द्र बिंबयुत मानस्तंभ मोहे।।
सर्वार्थसिद्धि सुख हेतु नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।46।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

संतानकादि तरु पश्चिम में खड़ा है।
इंद्रादि पूज्य गुण अतिशय से बड़ा है।।
आनंद धाम पद हेतु नमें मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।47।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

है पारिजात तरु उत्तर में अनोखा।
जो पूजते फल लहें अतिशायि चोखा।।
आत्मा पवित्र करके नमते मुनींद्रा।
मैं सिद्धबिंब जजहूँ यजते सुरेंद्रा।।48।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

–भुजंगप्रयात छंद –

समोसर्ण को पूजते भक्ति से जो।
लहें सौख्य संपद नवों निद्धि को वो।।
नमेरू तरू में जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।49।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

विमलनाथ का है समोसर्ण सोहे।
दिशा दक्षिणी वृक्ष मंदार मोहे।।
चतुर्दिक् तरू के जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।50।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

सुरासुर व किन्नर सदा कीर्ति गाते।
बृहस्पति गुणों का नहीं पार पाते।।

सुसंतानकं के जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।51।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

सुरों की वहाँ टोलियाँ आ रही हैं।
करें नृत्य भी अप्सरा गा रही है।।
जजूँ [1]पारिजातांग के सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।52।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

अनंताधिपति का समोसर्ण पूजें।
नमेरू तरू को जजें पाप धूजें।।
सुसिद्धार्थ के मैं जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।53।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

हरो दुःख मेरे अनंतों भवों के।
हमें सौख्य देवो अनंते स्वयं के।।
सुमंदार के मैं जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।54।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

महामोह अंधेर छाया हृदय में।
उसे दूर कर ज्ञान ज्योती भरूँ मैं।।
सुसंतानकांघ्रिप[2] जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।55।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

---

1. पारिजात नाम का अग–वृक्ष। 2. अंघ्रिप-वृक्ष।

अनंते चतुष्टय कि लक्ष्मी धरे हैं।
अठारह महादोष तुमसे परे हैं।।
महा पारिजातं जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।56।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

धरमनाथ का है समोसर्ण दीपे।
वहाँ पूर्वदिक् में नमेरू तरू पे।।
नमूँ शीश नाके जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।57।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

समोसर्ण में भूमि छट्ठी दिपे हैं।
नमूँ नित्य जो बिंब मंदार पे हैं।।
जजें इंद्र मैं भी जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।58।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

भरी कल्पतरु से छठी भूमि दीखे।
सभी के वहाँ पे मनोरथ फले थे।।
महावृक्ष संतानकं सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।59।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

सुसिद्धार्थ तरु पारिजातं नमें जो।
चतुर्दिक्क प्रतिमा हरें कर्म सब वो।।

फलें सर्ववांछित जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।60।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

प्रभो शांति ईश्वर जगत् शांति कर्ता।
नमेरू तरू को नमूँ सौख्य भर्ता।।
पुनर्जन्म नाशों जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।61।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

मुनीचित्तपंकज खिलाते रवी हो।
महाशांतिदाता विधाता शशी हो।।
सुमंदार तरु के जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।62।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

समोसर्ण शांतीश का सौख्यकारी।
वहाँ कल्पभूमी फलें इष्ट भारी।।
सुसंतानकांघ्रिप जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।63।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

महावृक्ष है पारिजाताख्य उसमें।
चतुर्दिक्क सुरपूज्य प्रतिमा उसी में।।
गणीश्वर नमें मैं जजूँ सिद्ध देवा।
करूँ आपके पाद की नित्य सेवा।।64।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

–दोहा –

कुंथुनाथ जिनराज का, समवसरण अभिराम।
छट्ठी भूमि नमेरु के, जजूँ सिद्ध सुखधाम।।65।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

समवसरण दक्षिणदिशी, तरु मंदार महान्।
जजूँ सिद्ध प्रतिमा सदा, पाऊँस्वात्मनिधान।।66।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

समवसरण पश्चिमदिशी, सन्तानक सिद्धार्थ।
सिद्ध बिंब चउदिश जजूँ, पूर्ण फलें सर्वार्थ।।67।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

उत्तर दिश में कल्पतरु, भूमि सर्व हितकार।
पारिजात तरु बिंब को, जजूँ सर्व सुखकार।।68।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

अरहनाथ जिननाथ का, समवसरण जग श्रेष्ठ।
जजूँ सिद्ध प्रतिमा सदा, तरु नमेरु सब ज्येष्ठ।।69।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

तीर्थनाथ को पूजते, अंत मिले जिननाम।
सिद्धारथ मंदार के, सिद्ध जजूँ गुणधाम।।70।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

करूँ तीर्थपति अर्चना, खंडित हो यमराज।
संतानक तरु बिंब को, जजत मिले निज राज्य।।71।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

अर जिनवर की भक्ति से, मुक्तिरमा वश होय।
पारिजात तरु बिंब को, जजूँ स्वात्म सुख होय।।72।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

मल्लिनाथ का जगत् में, समवसरण अतिरम्य।
तरु नमेरु के बिंब को, जजत मिले शिवशर्म।।73।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

मोहराज यमराज को, जीत बने जगदीश।
दक्षिणदिश मंदार के, बिंब जजूँ नत शीश।।74।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

क्षमाभाव से क्रोध को, किया निमूल जिनेश।
संतानक तरु अपरदिश, जजूँ मिटे भव क्लेश।।75।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

लोभ पाप को नष्ट कर, पाया त्रिभुवन राज्य।
पारिजात तरु बिंब को, जजत लहूँ निजराज्य।।76।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

मुनिसुव्रत भगवान का समवसरण सुरवंद्य।
तरु नमेरु के बिंब को, पूजूँ जग अभिनंद्य।।77।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

नमूँ सदा जिनदेव का, समवसरण अतिशायि।
सिद्धबिंब मंदार के, जजूँ सर्व सुखदायि।।78।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

त्रिभुवन जनता पूज्य है, समवसरण गुणधाम।
संतानक तरु बिंब को, जजूँ मिले निजधाम।।79।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

महामोह अज्ञानहर, ज्ञान ज्योति से पूर्ण।
पारिजात के बिंब को, जजत करूँ यम चूर्ण।।80।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

–चौपाई –

नमि जिन समवसरण अभिरामा, जजत भव्य बनते निष्कामा।
तरु नमेरु के चउदिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा[1]।।81।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

नमिजिनवर दुख संकट हारी, जो जन नमें वरें शिव नारी।
तरु मंदार चतुर्दिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।82।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

श्री नमिनाथ स्वात्मसुख भोगें, जो जन नमें परम सुख भोगें।
संतानक तरु चउदिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।83।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

1. वेध करूँ–नष्ट करूँ।

नमिजिन पाद सरोज जजें जो, सर्व उपद्रव दूर भगें जो।
पारिजात तरु चउदिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।84।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

नेमिनाथ करुणा के सिंधू, जजत चखूँ समरस सुखबिंदू।
तरु नमेरु के चउदिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।85।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

शिवललना के जिनवरस्वामी, त्रिभुवन के प्रभु अंतर्यामी।
तरु मंदार चतुर्दिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।86।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जगत्पूज्य सुरनर खग ईशा, जो पूजें सो लहें मनीषा।
संतानक तरु चउदिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।87।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

सौधर्मेन्द्र नरेन्द्र फणीन्द्रा, जिनचरणांबुज नमें मुनींद्रा।
पारिजात तरु चउदिश सिद्धा, पूजत करूँ विघन अरिविद्धा।।88।।

ॐ ह्रीं नेमिनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

समवसरण जिन पारसनाथा, पद्मावति फणपति नत माथा।
तरु नमेरु के चउदिश मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।89।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

समवसरण सुरवंद्य जिनंदा, वंदत सुरनर खग रविचंदा।
तरु मंदार चतुर्दिश मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।90।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थ-वृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

कमठ मान भंजन जिनराजा, भविजन पूजें निजहित काजा।
संतानक तरु चउदिश मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।91।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

कलियुग पाप दलन जगख्याता, तुम यश गातीं शारद माता।
पारिजात तरु चउदिश मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।92।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

समवसरण जिनगुण मणिमाली, जजत बने नर महिमाशाली।
तरु नमेरू में सिद्धन मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।93।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

समवसरण में राजें वीरा, महावीर सन्मति अतिवीरा।
तरु मंदार सिद्ध की मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।94।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

वर्द्धमान जिनवर को वंदे, पाप अद्रि हों सौ सौ खंडे।
संतानक तरु सिद्धन मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।95।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

सर्वोत्तम कल्पद्रुम वीरा, बिन मांगे फल पावें धीरा।
पारिजात तरु सिद्धन मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।96।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-गीता छंद –

इस कल्पतरु की भूमि में, सिद्धार्थ तरु चारों दिशी।
श्री सिद्धबिंब विराजते, प्रत्येक तरु के चहुँदिशी।।

एकेक मानस्तंभ हैं, प्रत्येक प्रतिमा के निकट।
उनमें चतुर्दिश बिंब जिनवर पूजते ही शिव निकट।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पतरुभूमिसंबंधिषण्णवतिसिद्धार्थवृक्षमूलभागविराजमानचतुरशीत्यधिकत्रिंशतसिद्धप्रतिमातत्संबंधितावत्प्रमाणमानस्तम्भचतुर्दिक्विराजमानषट्त्रिंशदधिकपंचदशशतजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणसिद्धार्थवृक्षस्थितसर्वसिद्धप्रतिमाभ्यो नमः।**

(लवंग, श्वेतपुष्प या पीले चावल से 108 बार
या 27 बार जाप्य करना।)

जयमाला

–दोहा –

कल्पवृक्ष चिंतामणी, जिनभक्तों के दास।
गाऊँ जिन गुणमालिका, पहुँचे जिनवर पास।।1।।

चाल –हे दीन बंधु.....

धनि धन्य सिद्ध वृंद जो सिद्धालयों में हैं।
धनि धन्य सिद्ध बिंब जो सिद्धार्थ तरु में हैं।।
धनि धन्य तीर्थकृत समोसरण महान हैं।
धनि धन्य समोसरण स्वात्म गुणनिधान हैं।।2।।

जो कल्पतरु नाम की छट्ठी धरा वहाँ।
हैं कल्पवृक्ष दशविधा चउदिश दिखे वहाँ।।
जन मांगते जो कुछ भी वे वृक्ष दे रहे।
सुरगण वहाँ पे आके क्रीड़ा में रत रहें।।3।।

पानांग वृक्ष बहुते विध पेय दे रहे।
तूर्यांग वाद्यवीणा मृदंग दे रहे।।
तरु भूषणांग बहुत से गहने दिया करें।
वस्त्रांग बहुत वस्त्र धोतियाँ दिया करें।।4।।

तरु भोजनांग विविध भोज्य वस्तु दे रहे।
तरु आलयांग महल कोठियाँ भी दे रहे।।
दीपांग दीप दे रहे सुंदर प्रकाशयुत।
तरु भाजनांग थाल आदि पात्र दें विविध।।5।।

मालांग वृक्ष सुरभि पुष्पमाल दे रहे।
तेजांग वृक्ष कोटि सूर्य ज्योति हर रहे।।
उस भूमि में कहीं पर ऊँचे भवन बनें।
कहिं बावड़ी जलों में फूले कुसुम घनें।।6।।

प्रत्येक दिश में इक इक सिद्धार्थ वृक्ष हैं।
तरु मूल में चतुर्दिक् श्री सिद्धबिम्ब हैं।।
प्रत्येक बिम्ब आगे इक मानथंभ हैं।
ये तीन कोट सहिते त्रयपीठ उपरि हैं।।7।।

एकेक समवसृति में, सिद्धार्थ चार-चार।
एकेक तरु में सिद्धों के बिंब चार-चार।।
एकेक मानथंभों में बिंब चार-चार।
सिद्धों के बिंब सोलह, चौसठ सु जिनाकार।।8।।

चौबीस समवसृति में, तरु छयान्वे सिद्धार्थ।
वे तीन सौ चुरासी, तरु सिद्धबिंब सार्थ।।
इतने हि [1]मानथंभों, में बिंब चतुर्दिश।
वे बिंब सर्व इक हजार पाँच सौ छत्तिस।।9।।

सौ इंद्र भक्ति से वहाँ पे वंदना करें।
नर नारियाँ भि द्रव्य लेय अर्चना करें।।
सुर अप्सरायें नित्य वहाँ नृत्य कर रहीं।
सुर किन्नरी वीणा व बांसुरी बजा रहीं।।10।।

चारों गली में चार चार नाट्य[2] शालिका।
बत्तीस रंगभूमियुक्त पांच खन युता।।

1-2. तिलोयपण्णत्ति से।

प्रत्येक में बत्तीस हि ज्योतिष्क देवियाँ।
वे नृत्य करें भक्ति भरीं, पुण्य देवियाँ।।11।।

इस भूमि के आगे चतुर्थ वेदिका बनी।
गोपुर पे देव भावन रक्षा करें घनी।।
प्रतिद्वार मंगलद्रव्यइक सौ आठ इकसौ आठ।
प्रत्येक तोरणद्वार पे नवनिधि के रहें ठाठ।।12।।

बहुविध अनेक वर्णना कोई न कह सके।
धनपति वहाँ जिनके प्रभाव से हि रच सके।।
मैं सिद्धबिंब की सदैव वंदना करूँ।
तीर्थेश भक्ति से दुखों को रंच ना धरूँ।।13।।

–दोहा –

तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।
ज्ञानमती की याचना, पूरो नाथ अबार।।14।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितकल्पभूमिसंबंधिसर्वसिद्धार्थवृक्ष-मूलभागविराजमानसर्वसिद्धप्रतिमाभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो भव्य भक्ति से समवसरण के, सिद्धार्थवृक्ष को यजते हैं।
सिद्धों के प्रतिबिम्बों का अर्चन, करके सुख संपति लभते हैं।।
वे समवसरण दर्शन करके, सब ऋद्धि–सिद्धि पा जाते हैं।
फिर 'ज्ञानमती' कैवल्य पाय, निश्चित सिद्धालय जाते हैं।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

प्रशस्ति

–शंभुछंद –

श्री शांति कुंथु अरनाथ प्रभू ने, जन्म लिया इस धरती पर।
यह हस्तिनागपुरि इंद्रवंद्य, रत्नों की वृष्टि हुई यहाँ पर।।
यहाँ जंबूद्वीप बना सुंदर, जिनमंदिर हैं अनेक सुखप्रद।
मेरा यहाँ वर्षायोग काल, स्वाध्याय ध्यान से है सार्थक।।1।।

इस युग के चारित्र चक्री श्री, आचार्य शांतिसागर गुरुवर।
बीसवीं सदी के प्रथमसूरि, इन पट्टाचार्य वीरसागर।।
ये दीक्षा गुरुवर मेरे हैं, मुझ नाम रखा था 'ज्ञानमती'।
इनके प्रसाद से ग्रंथों की, रचना कर हुई अन्वर्थमती।।2।।

सिद्धार्थ वृक्ष का लघु विधान, सिद्धों की प्रतिमा भक्तीवश।
यह रोग शोक दारिद्र्य दुःख, संकट हरने वाला संतत।।
जब तक चौबीसों तीर्थंकर प्रभु का जग में गुणगान रहे।
तब तक यह गणिनी ज्ञानमती, विरचित विधान जयशील रहे।।3।।

।। इति समवसरणसिद्धार्थवृक्षविधानम् संपूर्णम्।।

।।जैनं जयतु शासनम्।।

समवसरण सिद्धार्थ वृक्ष की आरती

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

मैं तो आरती उतारूं रे, सिद्ध जिनेश्वर की।
जय जय जय सिद्ध प्रभू, जय जय जय।।टेक.।।
प्रभु समवसरण में छठी, कल्पवृक्ष भूमी.....कल्पवृक्ष भूमी।
चारों दिश में हैं सिद्धार्थवृक्ष, महिमा हमने सुनी.....
महिमा हमने सुनी।
सबमें हैं चार बिम्ब, सिद्धों के सिद्धबिम्ब, उनमें विराजित हैं,
हो..... प्रभु उनमें विराजित हैं। मैं तो .....।।1।।
पूर्व दिशि आदि क्रम से नमेरु, मंदार के वृक्ष हैं.....मंदार के वृक्ष हैं।
संतानक व पारिजात के, सिद्धारथ वृक्ष हैं.....सिद्धारथ वृक्ष हैं।।
उनमें सिद्धों को नमन, याद करूँ समवसरण, महिमा निराली है,
हो ..... जिसकी महिमा निराली हैं।।मैं तो .....।।2।।
छियानवे हैं सिद्धार्थवृक्ष, चौबीस जिनवर के.....
चौबीस जिनवर के।
तीन सौ चौरासी हैं, जिनबिम्ब भी उनमें .....जिनबिम्ब भी उनमें।।
सबके पास मानस्तंभ, उनमें चार चार बिम्ब, सुन्दर विराजित हैं,
हो ..... सुन्दर विराजित हैं।। मैं तो .....।।3।।
इसका सुन्दर विधान लिखा, ज्ञानमती माताजी ने.....
ज्ञानमती माताजी ने।
पुण्य अर्जन का अवसर दिया, गणिनी शिरोमणि ने.....
गणिनी शिरोमणि ने।।
''चंदनामति'' भक्ति करूँ, दर्शन की शक्ति वरूँ, जिनवर का है दरबार,
हो ..... जिनवर का है दरबार। मैं तो .....।।4।।

समवसरण की आरती

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

चौबीस जिनवर के समवसरण की, मंगलदीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया।

समवसरण के बीच प्रभू जी नासादृष्टि विराजे।
गणधर मुनि नरपति से शोभित, बारह सभा सुराजे।।प्रभु जी....
ओंकार ध्वनि, सुन करके मुनि, रत रहें स्वपर कल्याण में,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।1।।

चार दिशा के मानस्तभों को भी मेरा वंदन।
मिथ्यादृष्टि जिनको लखकर पाते सम्यग्दर्शन।।प्रभु जी.....
करके दर्शन, प्रभु का वन्दन, सम्यक् का हुआ प्रचार है,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।2।।

ध्वजाभूमि के अन्दर देखो, ऊँचे ध्वज लहराएँ।
मालादिक चिन्हों से युत वे, जिनवर का यश गाएँ।। प्रभु जी.....
शुभ कल्पवृक्ष, सिद्धार्थ वृक्ष, से समवसरण सुखकार है।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।3।।

भवनभूमि के स्तूपों में, जिनवर बिंब विराजें।
द्वादशगण युत श्री मण्डप में, सम्यग्दृष्टि राजें।।प्रभु जी.....
अगणित वैभव, युत बाह्य विभव से, शोभ रहें भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।4।।

धर्मचक्रयुत गंधकुटी पर, अधर प्रभू रहते हैं।
उनकी आरति से ही 'चन्दना' भव आरत टरते हैं।। प्रभु जी.....
प्रभु ऋषभदेव से महावीर तक महिमा अपरंपार है।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।5।।

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

तर्ज—सौ साल पहले.....

बीते युगों में यहाँ पर समवसरण आया था.....समवसरण आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।टेक.।।

करोड़ों साल पहले भी, हजारों साल पहले भी।
ऋषभ महावीर इस धरती पर खाए और खेले भी।।
भारत की वसुधा पर तब, स्वर्ग उतर आया था.....स्वर्ग उतर आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।1।।

हुआ था जिनवरों को दिव्य केवलज्ञान जब वन में।
तभी ऐसे समवसरणों की रचना की थी धनपति ने।।
इन्द्र मुनी चक्री सबने लाभ बहुत पाया था-लाभ बहुत पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनमन पाया था।।2।।

आज के इस महाकलियुग में नहिं साक्षात् जिनवर हैं।
तभी हम मूर्तियों को प्रभु बनाकर रखते मंदिर में।।
सतियों ने इनकी भक्ति करके नाम पाया था-करके नाम पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।3।।

अधर आकाश की रचना धरा पर आज दिखती है।
बीच में ''चन्दना'' देखो प्रभू की गंधकुटी भी है।।
समवसरण का यह वर्णन शास्त्रों में आया था.....शास्त्रों में आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।4।।